JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मधुबनी जिला के जनसंख्या–संसाधन क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन

Sanjeet Kumar
Research Scholar,
UGC–NET
University Department of Geography
B.R.A. Bihar University,Muzaffarpur

Abstract

जनसंख्या वृद्वि द्वारा क्षेत्र के आर्थिक विकास, सामाजिक जागरुकता एवं राजनैतिक चैतन्यता का ज्ञान सरलता से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि जनसंख्या का कार्य व व्यवहार संसाधनों से प्रभावित होते है। यदि इसका अध्ययन किया जाय तो उस क्षेत्र के आर्थिक विकास को उसकी गति एवं दिशा को भी सरलता से समझा जा सकता है। जनसंख्या की निरन्तर वृद्वि से किसी क्षेत्र के खाद्य संसाधनों एवं पोषण के साधनों में कमी आती जाती है।

Keywords— जनसंख्या वृद्वि, आर्थिक विकास, सामाजिक जागरुकता, राजनैतिक चैतन्यता,. खाद्य संसाधन

परिचय

जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक उत्थान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं राजनीतिक आदर्श का एक महत्वपूर्ण सूचक है। जनसंख्या वृद्धि जनसांख्यिकीय गतिशीलता का महत्वपूर्ण व केन्द्रीय तत्व है। जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन सामान्यतः धानात्मक एवं ऋणात्मक रूप में किया जाता है। कुछ विद्वान जनसंख्या वृद्धि को जनसंख्या परिवर्तन के नाम से अभिहित करते हैं। यदि अन्तिम जनगणना वर्ष की जनसंख्या पिछली जनगणना से अधिक है तो धनात्मक परिवर्तन तथा कम हो तो ऋणात्मक परिवर्तन कहते हैं। जनसंख्या की वृद्धि अथवा ह्रास किसी क्षेत्र में जन्मदर व मृत्युदर के द्वारा नियंत्रित होता है, जिस पर अनेक भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत प्रजननता व मर्त्यता का अध्ययन विशेष रूप में किया जाता ळें

शोध प्रविधि– इस अध्ययन में मुख्य रूप से द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त आँकड़ों को आधार बनाया गया है और अध्ययन क्षेत्र में हो रहे भूमि एवं श्रम शक्ति के वर्तमान उपयोग, अनुपयोग तथा दुरूपयोग से संबंधित तथ्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। तत्पश्चात् उसके नियोजन की रूप रेखा तैयार की गई है। अध्ययन क्षेत्र की सामान्य जानकारी हेतु भौगोलिक अध्ययन की observation तकनीक अपनायी गयी है। आँकड़ों को सही रूप में लाने के लिए आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विधियाँ भी प्रयोग में लाई गई है तथा तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए मानचित्रों एवं आरेखों का भी प्रयोग किया गया है।

स्थिति एवं विस्तार

विश्व के किसी भी क्षेत्र की जनांकीकीय गत्यात्मकता पर जनसंख्या वृद्वि का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। साथ ही जनसंख्या का उसके द्वारा उपयोग में लायी जाने वाले संसाधन से उसका सहसम्बन्ध भी व्यक्त करता है। इन सभी का अध्ययन जनसंख्या सम्बन्धी ऑकड़ों के आधार पर किया जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देश में स्वतंत्रता के पश्चात जनसंख्या वृद्वि की

गति तीव्र हुई है, लेकिन 1971 के पश्चात परिवार नियोजन कार्यक्रम एवं जनसंख्या नियंत्रण से सम्बन्धित अनेकों प्रयास के बाद जनसंख्या वृद्वि में निरन्तर कमी आती जा रही है, जो भारत जैसे देश के लिए अतिमहत्वपूर्ण है। ज्ञात हो कि 1991 से 2001 के मध्य यह वृद्वि 21.35 प्रतिशत रही, जो 2001–2011 के मध्य और भी कम हुई है फिर भी अभी यह वृद्वि बहुत अधिक है, क्योंकि किसी भी देश के संसाधनों में जनसंख्या के सापेक्ष संसाधनों में इतनी वृद्वि सम्भव नही है। इस कारण अभी इसको और अधिक नियंत्रित करने की आवश्यक्ता है।

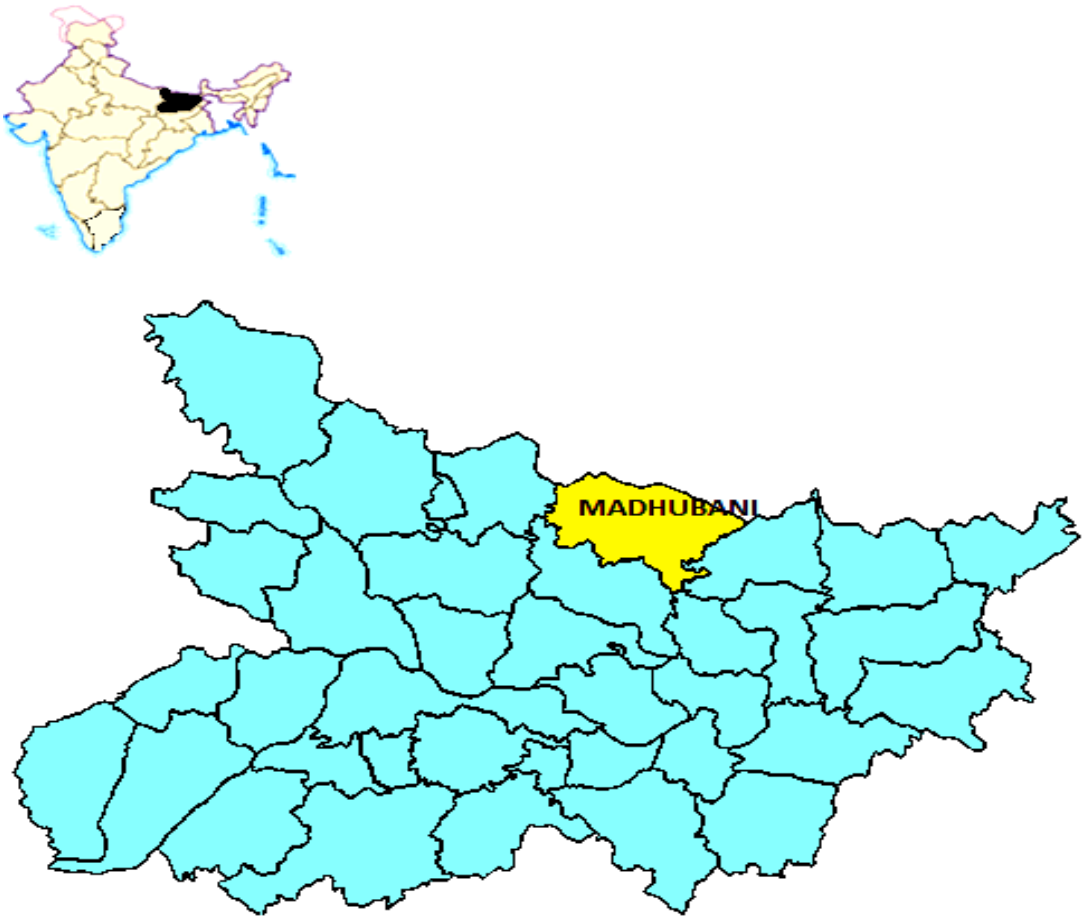

मधुबनी जिला एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाला क्षेत्र है। यहाँ जनसंख्या की वृद्वि के अध्ययन का विशेष महत्व है, क्योंकि इस क्षेत्र में उद्योगों का अभाव होने के कारण जनसंख्या सामान्यतः कृषि पर एवं उससे सम्बन्धित उत्पादों के उद्यम पर आधारित तथा आश्रित रहती है। इसका स्पष्ट प्रभाव प्रति व्यक्ति कृषि के उत्पादन पर देखा जा सकता है। तालिका संख्या 3.1 में जिला में में जनसंख्या का प्रतिरुप प्रदर्शित है, जिससे स्पष्ट होता है कि वर्ष 2011 की जनसंख्या के अनुसार जिला की कुल जनसंख्या 4487379 है, जिसमें ग्रामीण 4325884 एवं नगरीय 161495 है। इस प्रकार ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 96.40 एवं नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 3.60 है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्वि 1991 के बाद क्रमशः बढ़ती जा रही है। नगरीय जनसंख्या में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रीयों की जनसंख्या में अधिक वृद्वि दर्ज की गयी है। मधुबनी जिला में नगरीय केन्द्रों की संख्या कुल मिलाकर 5 है जिसमें तीन बड़े केन्द्र है, जो कि प्रखण्ड मुख्यालय है जिनका नाम जयनगर, मधुबनी एवं झंझारपुर है। इसके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 1991 से 2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या लगभग दो गुनी हो गयी है। 1991 से अब तक जिला जनसंख्या में जिस प्रकार वृद्वि दर्ज की जा रही है, उसी प्रकार ग्रामीण एवं नगरीय तथा पुरुष एवं स्त्री की भी जनसंख्या बढ़ रही है। नगरीय जनसंख्या बिहार के अन्य जिलों की अपेक्षा धीमी गति से वृद्धि कर रही है।

जिला में दशकीय वृद्धि में क्रमशः परिवर्तन होता जा रहा है। 1991 में दशकीय वृद्धि 23 प्रतिशत थी, जो 2001 में 4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 प्रतिशत हो गयी। इसके बाद 2011 में कुछ घटती हुई प्रतीत हो रही है। 2011 में मधुबनी जिले की दशकीय वृद्धि दर 25.5 रही। यहाँ पिछले दशक यानि 2001 के मुकाबले .5 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। इसी प्रकार यदि यह घटती रही तो दशक में कुछ और घटेगी।

उपरोक्त तालिका एवं आरेख के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1981 से लेकर 2011 तक की जनसंख्या वृद्धि का अवलोकन किया गया है। तालिका के अनुसार वर्ष 1981 की जनगणना के आधार पर कुल जनसंख्या 2,325,844 है, जो कि 30 वर्षों बाद 4,487,379 हो गयी है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि मधुबनी जिले की जनसंख्या लगभग दो गुनी हो गयी है। जिला में जनसंख्या वृद्धि प्रत्येक दशक एक समान नही रही है।

जनसंख्या वृद्धि (1981–2011)

यह काल 1981 से अब तक का है जिसमें धनात्मक वृद्धि देखने को मिलती है। 1981–1991 की अपेक्षा 1991–2001 के मध्य दशकीय वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक रही है। इसके बाद जिला को कई और छोटी इकाइयों में विभक्त कर दिया गया एवं उन स्थानों पर अनुमण्डल एवं प्रखण्ड मुख्यालयों की स्थापना की गयी। इसके बाद के काल में दशकीय वृद्धि अधिक रहा लेकिन 1991 से 2001 में इसमें और अधिक वृद्धि दर्ज की गयी जो निरन्तर 2011 तक बनी रही। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी प्रतीत होती है क्योकि शिक्षा का स्तर बढ़ने के कारण लोगों में जागरुकता आई है, जिसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर स्पष्ट रुप से दिखायी प्रतीत होता है। दशकीय वृद्धि का कम होना एक शुभ संकेत है, लेकिन जिला के संसाधनों को देखते हुए यह वृद्धि अधिक कही जा सकती है।

जनसंख्या वृद्धि का क्षेत्रीय प्रतिरुप

जिला में जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्रीय प्रतिरुप में विविधता दिखाई दे रही है। इसका कारण क्षेत्रीय विस्तार शिक्षा का स्तर एवं सामाजिक जागरुकता है। इसके अलावा प्रशासनिक सहभागिता में जनसंख्या को प्रभावित करती दिखायी पड़ रही है।

क्रम.	प्रखण्ड	जनसंख्या (2001)	जनसंख्या (2011)	दशकीय अंतर (प्रतिशत में)
1	मधवापुर	1,13,459	1,34,704	18.7
2	हरलाखी	1,51,708	1,96,251	29.4
3	बासोपट्टी	1,35,132	1,73,499	28.4
4	जयनगर	1,52,893	1,71,918	26.7
5	लदनिया	1,37,397	1,75,561	27.8
6	लौकाहा	1,67,469	2,12,127	26.7
7	लौकाही	1,62,483	2,08,317	28.2
8	फुलपरास	1,30,036	1,66,018	27.7
9	बाबूबरही	1,73,692	2,17,331	25.1
10	खजौली	1,15,365	1,43,583	24.5
11	कलुआही	92,386	1,17,282	26.9
12	बेनीपट्टी	2,86,091	3,61,400	26.3
13	बिस्फी	2,61,762	3,20,704	22.5
14	मधुबनी	2,58,895	2,40,786	25.0

15	पंडौल	2,18,702	2,70,642	23.7
16	राजनगर	1,99,343	2,38,873	23.9
17	अन्धराठारी	1,47,091	1,91,680	30.3
18	झंझारपुर	1,62,743	1,74,930	26.3
19	घोघड़ाडीहा	1,57,224	1,74,831	22.8
20	लखनौर	1,34,121	1,67,841	25.1
21	मधेपुर	2,17,289	2,67,606	23.2
	कुल	**35,75,281**	**44,87,379**	**25.5**

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि जिला के सभी प्रखण्डों में दशकीय वृद्धि में बहुत अन्तर नहीं है, जिसके अनेकों कारण है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारकों में क्षेत्रफल, शिक्षा एवं स्थानिय सामाजिक विन्यास है। जिला में सबसे अधिक दशकीय वृद्धि अन्धराठारी प्रखण्ड एवं सबसे कम मधवापुर प्रखण्ड का है। जिले का औसत दशकीय वृद्धि 2011 में 25.50 प्रतिशत रही है, जिसमें अधिक वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों में एवं कम नगरीय क्षेत्रों में है। नगरीय क्षेत्रों में कम वृद्धि का मुख्य कारण शिक्षा, जागरुकता एवं मनोरंजन के साधनो में वृद्धि है।

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सबसे अधिक जनसंख्या 2001 में बेनीपट्टी एवं 2011 में भी बेनीपट्टी में ही रही है। इसके वितरण को चार वर्गो में विभक्त किया गया है। न्यून संवर्ग के अन्तर्गत 20 प्रतिशत से कम वृद्विदर वाले प्रखण्ड को रखा गया है। यद्यपि यह जनवृद्वि बहुत अधिक होने के कारण इसे तुलनात्मक रुप में न्यून जनवृद्वि कहा जा सकता है। 1991 से 2001 के मध्य इस संवर्ग में तीन प्रखण्ड थे, जबकि 2001 से 2011 के मध्य इसके अन्तर्गत केवल एक प्रखण्ड मधवापुर रहा है, जिसकी स्थिति पूर्व की ओर है।

मध्यम सम्वर्ग के अन्तर्गत 20–25 प्रतिशत वृद्वि वाले प्रखण्डों को रखा गया है। 1991–2001 के मध्य इसमें कुल आठ प्रखण्ड थे, जिसमें बासोपट्टी, जयनगर, खजौली, बेनीपट्टी, मधुबनी, अन्धराठारी, झंझारपुर तथा घोघड़ाडीहा रहा है, जिसकी स्थिति दक्षिण–पश्चिम एवं दक्षिण–पूर्व में है, जबकि 2001–2011 के मध्य इसमे कुल 6 प्रखण्ड, खजौली, बिस्फी, पंडौल, राजनगर, घोघड़ाडीह तथा मधुपुर प्रखण्ड सम्मिलित है, जिसका विस्तार लगभग संपूर्ण जिला में है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम दशक की अपेक्षा दूसरे दशक में वृद्वि कम हुई है।

उच्च संवर्ग के अन्तर्गत 25–30 प्रतिशत वृद्वि वाले प्रखण्डों को रखा गया है। 1991–2001 के मध्य इसमे कुल पाँच प्रखण्ड थे, जो क्रमशः हरलाखी, लौकाही, फुलपरास, बाबूबरही एवं घोघड़ाडीहा है। इनकी स्थिति उत्तर एवं दक्षिण की ओर है, जबकि 2001 से 2011 के मध्य इसके अन्तर्गत सबसे अधिक तेरह प्रखण्ड सम्मिलित हैं, जो क्रमशः हरलाखी, बासोपट्टी, जयनगर, लदनिया, लौकाहा, लौकाही, फुलपरास, बाबूबरही, कलुआही, बेनीपट्टी, मधुबनी, झंझारपुर तथा लखनौर है, जिसकी स्थिति उत्तर–पश्चिम की तरफ है।

अतिउच्च संवर्ग के अंतर्गत 30 प्रतिशत से अधिक वृद्वि वाले प्रखण्डों को रखा गया है। इसमें 1991–2001 के मध्य चार प्रखण्ड क्रमशः मधवापुर, लदनिया, लौकाहा तथा बिस्फी प्रखण्ड सम्मिलित है जिसमें बिस्फी प्रखण्ड की वृद्धि दर सबसे अधिक पायी गयी। इन चारों प्रखण्डों की बात करें तो इनका विस्तार लगभग पुरे जिले में है, जबकि 2001–2011 के मध्य इसमें केवल एक प्रखण्ड अन्धराठारी है, जिसकी स्थिति पश्चिमोत्तर भाग में है। उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि

1991–2001 की अपेक्षा 2001–2011 के मध्य जनसंख्या वृद्वि में आंशिक कमी आयी है, जो यह दर्शाता है कि मधुबनी जिला में जीवनयापन के आवश्यक तत्वों में वृद्वि हुई है।

मानव संसाधन क्षेत्र

वर्त्तमान समय में जिला की अर्थव्यवस्था एक संक्रमण काल से गुजर रही है, अतः यहाँ मानव संसाधन प्रबन्धन वर्तमान समय की एक अनुपेक्षणीय आवश्यकता बन गयी है। कार्य, संस्कृति, नवाचार, कार्मिक विकास एवं अस्तित्व रक्षा यहाँ वर्तमान समय की आवश्यकता बन गयी है। प्रसिद्ध प्रबन्ध विशेषज्ञ 'डेल मोडर' ने कहा है कि 'मानव संसाधन प्रबन्ध यह निर्धारित करने एवं सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है कि संगठन में पर्याप्त मात्रा में ऐसे योग्य व्यक्तियों को सही समयों पर, सही स्थानों पर, सही संख्या में लगाना है ताकि वे प्रभावी एवं कौशल पूर्ण ढंग से संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति करने में योगदान दे सकें।'' इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव संसाधन प्रबन्धन संगठनात्मक सफलता की कुंजी है, जिसका सम्बन्ध उपक्रम में कार्यरत मानव संसाधन से है जो अन्य संसाधनों को गत्यात्मक बनाता है, उत्पादकता बढ़ाता है और निष्पादन स्तर की गुणवत्ता को संवर्द्धित करता है। मानव संसाधन प्रबन्ध में योग्य व्यक्तियों की पहचान करना, योग्य व्यक्तियों का विकास करना, उनको अभिप्रेरित करना और उनका रख–रखाव या उन्हें उपक्रम में बनाए रखना जैसे क्रियाकलापों को सम्मिलित किया जाता है। मानव संसाधन प्रबन्धन के परिप्रेक्ष्य में चीन के महान दार्शनिक 'कांग चांग द्रुम' ने भी कहा है कि ''यदि एक वर्ष के लिए नियोजन करना है तो बीज बोइए, यदि दस वर्ष के लिए नियोजन करना है तो पेड़ लगाइए किन्तु यदि सम्पूर्ण जीवन के लिए नियोजन करना है तो व्यक्तियों का विकास कीजिए।''

अध्ययन क्षेत्र मधुबनी जिला का सम्पूर्ण अर्थतंत्र कृषि पर अवलम्बित है, परन्तु आज भी इस जिला में कृषि कार्य विकसित अवस्था में नहीं है, जिसका प्रमुख कारण कृषि हेतु आवश्यक अवस्थापनाओं और उत्तर तकनीक का अभाव है। यहाँ पर कृषि प्रतिशत और सिंचाई सघनत्व 67.8 प्रतिशत है। यहाँ सम्पूर्ण क्षेत्रफल की 3.9 प्रतिशत भूमि परती के रूप में तथा 2.6 प्रतिशत भूमि कृष्य बंजर के रूप में मिलती है। इसके 62 प्रतिशत भाग पर खाद्यान्नों का उत्पादन किया जाता है, फिर भी इस जिला के प्रत्येक भाग के निवासियों को भारतीय मानक के आधार पर आदर्श पोषण उपलब्ध नहीं हो पाता है। इस जिला के प्रत्येक भाग में जनसंख्या और संसाधनों के वितरण में अत्यधिक विषमताएँ व्याप्त हैं। इसके कुछ विशिष्ट भागों में संसाधनों की बहुलता है तो कई भागों में जीवन निर्वाह हेतु आवश्यक संसाधनों का अभाव या कमी है। इसी प्रकार कहीं पर प्रौद्योगिकी के उच्चतर विकास से वहाँ विद्यमान संसाधनों का पर्याप्त विकास सम्भव हुआ है तो कई भागों में पर्याप्त संसाधन भंडार होते हुए भी प्रौद्योगिकी के पिछड़ेपन के कारण उनका समुचित विदोहन नहीं हो पा रहा है और इसी प्रकार की असमानता यहाँ जनसंख्या के वितरण में भी पायी जाती है। जिला में जहाँ की जलवायु उत्तम है, भूमि समतल और उपजाऊ है तथा अवस्थापनात्मक तत्वों की बहुलता है वहाँ जनसंख्या का जमाव अधिक और जहाँ इनका अभाव है वहाँ कम मिलती है। इस प्रकार जिला में जनसंख्या और संसाधन से उत्पन्न सम्बन्धों से उत्पन्न प्रतिरूपों में असमानता पाया जाना स्वाभाविक है।

किसी भी क्षेत्र विशेष के संसाधनों की मात्रात्मक तालिका तैयार करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन कार्य अवश्य है और उतना ही कठिन कार्य मानव के कारक रूप को भी निर्धारित करना है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की कार्य क्षमता और उसके कार्य करने के ढंग अलग–अलग होते हैं। संसाधनों का उपयोग प्रतिरूप मानव की कार्यशीलता, उसकी बुद्धि और स्वभाव पर निर्भर करता है। उदाहरण स्वरूप जहाँ साक्षरता का स्तर उच्च है वहाँ संसाधनों का भी अनुकूलतम विकास और

उपयोग सम्भव हुआ है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का ही नहीं बल्कि जनसंख्या के उन लक्षणों का भी विशेष महत्व है, जिससे क्षेत्र–विशेष के संसाधनों का उपभोग प्रतिरूप निर्धारित होता है।

अध्ययन क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना (जनसंख्या वृद्धिदर) तथा संसाधन भण्डार और सामाजिक–आर्थिक विकास के स्तर, जिले के सम्पूर्ण मैदान का उच्चावच्च, भूमि की प्रकृति, जल प्रवाह प्रतिरूप, भूमिगत जल स्तर तथा मिट्टी की प्रकृति के साथ–साथ यहाँ पायी जाने वाली जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों से उनके सम्बन्ध को आधार मानते हुए जिला के समस्त प्रखण्डों को तीन मुख्य श्रेणियों में विभक्त किया गया है जो निम्नलिखित हैं –

1. विकसित या गत्यात्मक जनसंख्या–संसाधन क्षेत्र –

अध्ययनक्षेत्र में इसके अन्तर्गत उन प्रखण्डों को सम्मिलित किया गया है जहाँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान का जिला के अन्य प्रखण्डों की अपेक्षा अधिक विकास हुआ है और जनसंख्या संसाधन सम्बन्ध भी उच्च अवस्था में है। इसके अन्तर्गत जिला के कुल 5 प्रखण्ड जयनगर, मधुबनी, अन्धराठारी, झंझारपुर तथा घोघड़ाडीहा को सम्मिलित किया गया है। इस समस्त प्रखण्डों के नगरीय क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार उपलब्ध होने के कारण जिला के दूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से अत्यधिक मात्रा में लोग आकर अपनी आजीविका चलाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ जनसंख्या सघन और वृद्धिदर अधिक है। इस वर्ग के अन्तर्गत शामिल प्रखण्डों का जनसंख्या घनत्व 1050 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से भी अधिक है। यहाँ जनसंख्या संसाधन अन्तर्सम्बन्ध उच्च होने का प्रमुख कारण लघु उद्योग धन्धों नगरीय केन्द्रों, कृषि योग्य अत्यन्त उपजाऊ भूमि, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान, आवागमन के लिए अच्छी सुविधाओं और शैक्षिक स्तर आदि का उच्च होना है।

2. विकासशील या भावी जनसंख्या–संसाधन क्षेत्र –

अध्ययनक्षेत्र में इसके अन्तर्गत उन प्रखण्डों को सम्मिलित किया गया है जहाँ उपलब्ध संसाधनों का अभी पर्याप्त विकास सम्भव नहीं हो पाया है किन्तु भविष्य में शिक्षा, प्रौद्योगिकी, सामाजिक जागरूकता आदि में वृद्धि के साथ भविष्य में यहाँ आर्थिक विकास स्तर के और भी उच्च होने की प्रबल संभावनाएँ हैं। जिला में इस वर्ग के अन्तर्गत 10 प्रखण्ड बासोपट्टी, पंडौल, खजौली, मधेपुर, लखनौर, बाबूबरही, कलुआही, बिस्फी, बेनीपट्टी और फुलपरास को रखा गया है।

3. अविकसित या समस्याग्रस्त जनसंख्या–संसाधन क्षेत्र –

अध्ययन क्षेत्र में इसके अन्तर्गत उन प्रखण्डों को सम्मिलित किया गया है जहाँ मानव संसाधनों का अभी विकास सम्भव नहीं हो पाया है। इन प्रखण्डों में मधवापुर, हरलाखी, बासोपट्टी, लौकाहा, लौकाही एवं लदनिया शामिल है। इन प्रखण्डों में कई नदियों के प्रवाह और नेपाल से सटे हुए प्रखण्ड होने के कारण हिमालयी वातावरण का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। इस भाग में नदियों के छाड़न, विसर्प तथा उनके द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की स्थलाकृतियाँ जहाँ–तहाँ पायी जाती है। अत्यधिक नमी युक्त भाग होने के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के वनस्पतियाँ और लम्बी घासें पायी जाती हैं। यहाँ व्यापक बेरोजगारी, निर्धनता और अशिक्षा आदि के कारण सामाजार्थिक विकास का स्तर निम्न है और रोजगार की खोज में इस प्रखण्ड की ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास दूरवर्ती नगरीय केन्द्रों के लिए होता रहता है। अतः यह प्रखण्ड जिला का एक अविकसित और समस्याग्रस्त भाग है।

यह सत्य है कि जिला में अत्यधिक तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि ने जहाँ–तहाँ निर्धनता को जन्म दिया है। इसके कुछ भागों में जनाधिक्य होने के कारण प्रशासन, चिकित्सा, शिक्षा, आवास और यातायात जैसी सुविधाएँ कमजोर पड़ती जा रही है। अतः इसका समाधान कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना और वृद्धि से सम्भव हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Devis, Kingsley : Population Policy and Economic Development, Stanford Research Institute, 1961.
2. Jhingan, M.L., Bhatt, B.K. & Desai, J.N. : Demography, Vrinda Publication (P) Ltd., Delhi.
3. Paul Meadows : Towards a Socialized Population Policy, Psychiatry, Vol. 11
4. वी. कुमार : जनांकिकी, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
5. जे. सी. पन्त : जनांकिकी, विशाल पब्लिशिंग कं., जालंधर।
6. वी. सी. सिन्हा एवं पुष्पा सिन्हा : जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
7. डी. एस. बघेल एवं किरण बघेल : जनांकिकी, विवेक प्रकाशन,दिल्ली।
8. District Census Handbook, Madhubani, 1991, 2001, 2011.
9. Gosal, G.D. and Chandna, R.C. (1979) : "Population Geography", Survey of Research in Geography, 1969-72, New Delhi.
10. मौर्य, साहबदीन (2005) जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।